पेड़ की तरह

राजेश जोशी

पेड़ की तरह सोचता हूँ
पेड़ भर
ऊँचा उठकर ।

पेड़ भर सोचता हूँ
पेड़ भर
चौड़ा होकर ।

इसी से
जंगल नाराज़ है ॥

राजेश जोशी, **एक दिन बोलेंगे पेड़**
हापुड़, संभावना प्रकाशन, 1980:45